भारत स्वाभिमान

किसान-पंचायत

विषमुक्त कुदरती खेती

किसी भी राष्ट्र को प्रगति के पथ पर गतिमान होने के लिए उसके नागरिकों का स्वस्थ होना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि वे समग्र चेतना से पुरुषार्थ करके अपने राष्ट्र को समृद्ध बना सकें। दुर्भाग्य से हमारा देश कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के षड्यन्त्र का शिकार होकर अपने नैनिहालों, युवक, युवतियों जो देश के कर्णधार व भविष्य हैं, को स्वस्थ विषमुक्त प्राकृतिक खाद्यान उपलब्ध नहीं करा पा रहा है। आज भी वास्तविक भारत गाँवों में बसता है, गाँव इस देश की आत्मा व आधार हैं। हमारे किसान अन्नदाता हैं, जो सभी का भरण-पोषण करके लोगों को जीवन देते हैं लेकिन वर्तमान परिवेश में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने हमारे भोले-भाले किसानों को अधिक उत्पादन के झूठे स्वप्न दिखाकर खतरनाक रासायनिक खादों व जहरीले कीटनाशकों के जाल में फंसा लिया है जिनके प्रयोग से उत्पादित विषयुक्त खाद्यान को ग्रहण करने से लोग कैंसर, टी.बी., दमा, शुगर व बी.पी. जैसी खतरनाक बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं और हमारे किसान अनजाने में इस पाप के भागी बन रहे हैं। आज देश में लगभग 5 लाख करोड़ रुपये के रासायनिक खाद व विषैले कीटनाशकों का प्रयोग व उनके प्रयोग से पैदा हुई बीमारियों पर लगभग 10 लाख करोड़ रुपये खर्च किया जा रहा है। ज्यादा खर्च-कम उपज के कारण किसानों की आत्महत्यायें व जहरीले अन्न व शाक सब्जियों के सेवन से भयंकर बीमारियों के कारण देश को मौत के मुँह में धकेला जा रहा है।

हमें स्वदेशी कृषि व्यवस्था को अपनाकर पहले कम लागत से सामान्य पैदावार और बाद में कम लागत से अधिक पैदावार करके रासायनिक खादों व कीटनाशकों के कुचक्र से देश को बचाना है। निरन्तर शोध व अनुसंधान से प्राप्त परिणामों के आधार पर प्राचीन प्रक्रिया व वैज्ञानिक तरीके से निर्दोष, लाभकारी वैज्ञानिक विषमुक्त जैविक व प्राकृतिक खेती को गाँवों में स्थापित करना ही हमारा लक्ष्य है। जहरीले रासायनिक खादों व कीटनाशकों से मुक्त गोबर आदि के स्वदेशी खाद व पशुओं के मूत्र आदि से बने हानि रहित कीटनाशकों व स्वदेशी उन्नत बीजों के प्रयोग से ही स्वस्थ भारत व समृद्ध किसान का सपना साकार हो सकता है। कुदरती खाद, कुदरती कीटनाशक एवं देशी बीज की पूरी जानकारी हेतु आपको शीघ्र ही योगपीठ से साहित्य आदि भी प्राप्त हो सकेगा तथा योग संदेश पत्रिका से भी यह जानकारी निरन्तर मिलती रहेगी।

संक्षेप में कुछ मूलभूत प्रक्रिया हम यहाँ आपके लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि आपके पास एक गाय या अन्य पशुधन है तो आप कम से कम दस एकड़ भूमि पर विषमुक्त कृषि कर सकते हैं। जहाँ तक सम्भव हो सके अपने खेतों की जुताई ट्रैक्टर से नहीं करके बैल या ऊँट से करें जिससे खेती बंजर नहीं होगी तथा धरती को उर्वरता प्रदान करने वाले केंचुओं व अन्य सैंकड़ों जीवों की भी रक्षा होगी।

कृषि व किसान से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य :

1. शुद्ध आहार हमारा अर्थात् किसी भी देश के नागरिकों का मूलभूत मौलिक अधिकार है।
2. किसानों को खेती का जब तक लागत मूल्य नहीं मिलेगा तथा सस्ते दामों में बिजली नहीं मिलेगी और सम्पूर्ण देश में जल- प्रबन्धन की जब तक कोई राष्ट्रीय जल नीति नहीं बनेगी तब तक भारत के किसानों व खेती से जुड़े मजदूरों व कारीगरों का भला नहीं हो सकता। यदि लागत मूल्य किसानों को नहीं मिलता है तो उनको फसलों के वर्तमान मूल्य के साथ कम से कम बराबर की क्षतिपूर्ति करने की योजना बनानी होगी। गेहूँ, सोयाबीन व चना आदि सभी फसलों के वर्तमान सरकारी समर्थन मूल्य कम से कम चार गुणा उनका लागत मूल्य बैठता है। सरकार सबको न्याय देने की बात करती है फिर किसानों को न्याय क्यों नहीं मिलता?
3. उद्योग, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य व समस्या का निस्तारण करवाने के लिए सम्बन्धित मन्त्रालय होता है जबकि किसान को एक कृषि कार्य के लिए अलग-अलग मंत्रालयों में (यथा रसायन, फूड एण्ड हर्बल प्रोसेसिंग, बिजली, कृषि व जल आदि) चक्कर लगाने पड़ते हैं फिर भी किसानों की समस्याओं का समाधान एक भी जगह नहीं हो पाता है।
4. फसलों का लागत मूल्य मिलने तथा जहरीले खाद, कीटनाशक व महंगे बीजों के कारण कृषि में लागत मूल्य बढ़ने से किसानों

की आत्महत्याएँ 10 लाख का आंकड़ा पार कर चुकी हैं। देश के अन्नदाता किसान की आत्महत्या राष्ट्रीय शर्म व महापाप है।

5. पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने उद्योगपतियों व कुछ अन्य लोगों को फायदा पहुँचाने के लिए 22 लाख करोड़ का सरकारी घाटा दिखाया। तो फिर किसानों के लिए सरकारी बजट का कुछ पैसा क्यों नहीं निकाला जा सकता?
6. किसानों का राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत संगठन नहीं होने तथा वर्तमान में किसान संगठनों के बीच राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत तालमेल या समन्वय नहीं होने से किसानों के मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी आवाज नहीं मिल पा रही है।
7. हमें कृषि को छोटा व हीन कार्य नहीं मानना चाहिए। वेदों में कृषि कार्य को सर्वश्रेष्ठ दर्जा दिया गया है। अपने अतीत में सीता माता के पिता महाराज जनक हों या योगेश्वर श्रीकृष्ण के भाई बलराम हों अथवा कणाद ऋषि हों, सभी श्रेष्ठ पुरुषों व ऋषि मुनियों ने कृषि कर्म को सर्वोपरि सम्मान व स्थान दिया है। हमारे समाज में एक प्रचलित जनलोकोक्ति भी कृषि कर्म की श्रेष्ठता को अभिव्यक्त करती है–**"उत्तम खेती मध्यम बान, करे चाकरी कुकर निदान"**। इसलिए हम कृषि कर्म को देश में ऋषिकर्म का सम्मान दिलाना चाहते हैं।

कुदरती खेती के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ :

1. एक एकड़ में शीशम, आम, कटहल, सिल्वर ओक, चीकू, नारियल, पपीता, केला व सागौन आदि ऐसे पेड़ जो खेत की उर्वरता बढ़ाने में मदद करते हैं, को अवश्य लगाने चाहिए। इन वृक्षों पर बैठने वाले पंछी कीटों को खाकर फसलों को बचाने का काम करते हैं साथ ही खेत में खाद भी देते हैं। पंछी अनाज कम व फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़ों को अधिक खाते हैं। एक चिड़िया दिन में लगभग 250 सूंडी खा लेती है। पेड़ों से 10-20 साल में किसानों को अतिरिक्त आर्थिक लाभ मिलता है। जांटी आदि से पशुओं को आहार, रसोई के लिए लकड़ी तथा परिवार के लिए फल मिलते हैं। पेड़ों के साथ गिलोय व काली मिर्च आदि लगाकर और अधिक आर्थिक लाभ कमा सकते हैं।
2. एक ग्राम मिट्टी में लगभग 3 करोड़ सूक्ष्म जीव होते हैं। खेत के पत्तों, धान व अन्य प्रकार के चारें में आग लगाने एवं जहरीली खाद व कीटनाशकों को डालने, ट्रैक्टर से खेत जोतने पर ये सूक्ष्म जीव मरते हैं और धरती धीरे-धीरे बंजर बन जाती है।
3. अधिक पानी जमीन का शत्रु, नई जमीन का मित्र तथा फसलों व गोभी आदि सब्जियों का कचरा भूमि माता के वस्त्रों का काम करते हैं, जो जमीन को सर्दी गर्मी से बचाते हैं, तापमान को नियन्त्रित रखते हैं तथा जमीन की नमी को भी बरकरार रखते हैं। अत: भूमि की मल्चिंग के लिए फसलों का कचरा खेत के लिए खतरा नहीं उसकी ताकत है।
4. लगभग एक एकड़ भूमि में 90 हजार केंचुएँ होते हैं। एक केंचुवा खेत में हजारों किलोमीटर खुदाई करने की क्षमता रखता है। जो भूमि जैविक कृषि द्वारा पोषित होती है और जहाँ केचुएँ संरक्षित किये जाते हैं उस भूमि की 5 वर्षों में -
   (क) 5 गुणा नाईट्रोजन की ताकत बढ़ जाती है। (ख) 7 गुणा फास्फोरस की ताकत बढ़ जाती है।
   (ग) 11 गुणा पोटास की ताकत बढ़ जाती है। (घ) 2.5 गुणा मैग्नीशियम की ताकत बढ़ जाती है।

   अत: प्राकृतिक खेती में कृत्रिम रासायनिक खाद, यूरिया, व डी.ए.पी. की जरूरत नहीं पड़ती है। गोबर, गौमूत्र व पेड़ के पत्तों से भूमि को ये पोषक तत्व स्वयं ही मिलते रहते हैं।
5. एक केंचुवे का 10 दिन से 30 दिन का जीवन होता है। यह लगभग 6 अण्डे प्रतिदिन देता है। एक मे ही नर-मादा दोनों होते हैं अर्थात् द्विलिंगी होता है। अपने जीवनकाल में 30 से 40 बच्चे तैयार कर देता है तथा एक केंचुवा लगभग 3 टन मिट्टी को अपने जीवन काल में खाद के रूप में परिवर्तित कर देता है। अत: एक भी केंचुआ मरना नहीं चाहिए, यह किसान व खेत का सबसे बड़ा मित्र है।
6. पेड़ का एक पत्ता धरती के लिए एक नोट के बराबर है तथा एक केंचुआ एक बोरी यूरिया या डीएपी से अधिक लाभकारी है।
7. कर्नाटक के भाई नारायण रेड्डी ने पिछले बीस बरसों में अपने खेतों में यह कुदरती खेती की है तथा बीस लाख के तो पेड़ तैयार हो गए। कुदरती खेती से उनकी आमदनी बढ़ी है और तीस एकड़ जमीन खरीद ली है। जबकि यूरिया, डीएपी तथा अन्य जहरीले खाद व कीटनाशक डालने वाले किसान की जिन्दगी, रोग व आत्महत्या से खत्म हो रही है तथा जमीन भी बेचनी पड़ रही है।
8. खेत में कहीं भी कभी भी यूकेलिप्टस नहीं लगाना है।
9. रासायनिक खेती से नैसर्गिक खेती के लिए खेत को तैयार करने के लिए पहले आप अपने खेत में पहले तालाब की मिट्टी, जंगल के पेड़ों के नीचे की मिट्टी, हरी खाद जैसे ढ़ैंचा व पटसन आदि बोकर उसी जमीन में उसे काटकर मिला देना, गोमूत्र, गोबर, गुड़

व दाल वाली खाद व कम्पोस्ट खाद डालें, इससे भूमि की उर्वरता बढ़ेगी तथा उपज कम नहीं होगी क्योंकि कुछ लोग जब यूरिया, डीएपी आदि से सीधे कुदरती खेती पर आ जाते हैं तो खेत यदि तैयार नहीं किया तो आपकी उपज कम हो सकती है।

10. एक एकड़ जमीन में पहले वर्ष 800 किलो गोबर की खाद, दूसरे वर्ष 600 किलो, तीसरे वर्ष 400 किलो फिर 200 या 100 किलो गोबर की खाद डालनी चाहिए।
11. किसानों को फसल चक्र विज्ञान तथा कीट चक्र विज्ञान का भी पूरा ज्ञान होना चाहिए। एक फसल दूसरी फसल की पूरक होती है। अत: दालें, सब्जियाँ, अलग-अलग प्रकार के अन्न, कौन सी ऋतु में कौन सी सब्जी बोना है जिससे उसके ऊपर कम से कम कीट आयें इत्यादि छोटी-छोटी बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार यदि एक कीड़ा फसल को खाने वाला है तो कीड़े को खाने के लिए प्रकृति ने तीन कीड़े बनाये हैं। अत: कीटों के इस प्राकृतिक नियंत्रण चक्र को समझने की आवश्यकता है। जैसे बलवान इन्सान को कोई रोग नहीं होता वैसे ही कुदरती खेती करने से फसल बलवान होती है। उस पर वैसे ही कम से कम कीड़े लगते हैं तथा लगते भी हैं तो प्राकृतिक चक्र से स्वयं ही नियन्त्रित होते जाते हैं।
12. दुनियाँ में महाभारत की लड़ाई को सबसे बड़ा माना जाता है, वह भी 18 दिन में पूरी हो गई थी। ये कीड़ों की लड़ाई 30 वर्षों से चल रही है और कीड़े मर नहीं रहे हैं। इसका सीधा-सा मतलब है कि अधिकांश कृषि वैज्ञानिक किसानों के लिए नहीं अपितु दवा, खाद, बीज व यंत्र आदि बनाने वाली कम्पनियों को फायदा पहुँचाने के लिए ज्यादा काम करते हैं और कीड़ा आदि के नाम पर भ्रम फैलाकर किसानों को लूटते हैं।
13. जैसे माँ को एक संतान के बाद तीन वर्ष का आराम देते हैं, वैसे ही धरती माँ को भी साल में यदि तीन माह का आराम दिया जाये तो खेत की मिट्टी ज्यादा उपजाऊ रहती है।
14. किसान की जरूरत की हर चीज उसे अपने खेत में पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। किसान को 99% दुकान पर जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसके लिए फसल चक्र का ज्ञान सब किसानों को होना चाहिए।
15. मिश्रित फसल चक्र के बारे में भाई शूरवीर सिंह जी का 28 वर्षों का अनुभव अत्यंत प्रसंशनीय व अनुकरणीय है। एक होती है मुख्य फसल जैसे गेहूँ, गौण फसल जैसे सरसों, सहायक फसल जैसे चना, अतिथि फसल जैसे मूलि-शलजम आदि, रक्षक फसल जैसे धनिया, मेथी, पटसन व सौंफ आदि। इसी प्रकार अन्य फसलों के बारे में भी यही बात लागू होती है।
16. पतंजलि योगपीठ में पूज्य आचार्य श्री बालकृष्ण जी व परम श्रद्धेय स्वामी जी के आशीर्वाद व प्रेरणा से देश के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक भाई श्री देवेन्द्र शर्मा जी के मार्गदर्शन व नेतृत्व में इस कुदरती विषमुक्त कृषि के लिए एक बहुत बड़ा व्यावहारिक प्रयोग चल रहा है, जिसमें मुख्य रूप से भाई श्री सुभाष शर्मा जी व उनके सहयोगी एक प्रकार की नैसर्गिक खेती का, भाई श्री सुरेश देसाई जी, भाई शूरवीर सिंह जी व भाई अमरजीत जी एक दूसरे प्रकार की कुदरती खेती के मॉडल पर तथा बहन संगीता जी व उनके सहयोगी एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट देसी बीज पर तैयार कर रहे हैं। इसमें भाई श्री नारायण रेड्डी जी, पूर्वी व्यास जी, राजवीर सिंह जी, डॉ० सुरेन्द्र लाल जी, भाई श्रीप्रकाश रघुवंशी जी, एवं श्री नटवर सिंह जी आदि भी सहयोग कर रहे हैं। जून, 2012 तक यहाँ पूरे देश के किसानों को कुदरती विषमुक्त स्वदेशी कृषि का व्यवहारिक प्रशिक्षण तथा साथ में ही ग्रामोद्योग के बारे में भी प्रशिक्षण प्रारम्भ हो जायेगा।
17. 10 किलो गोबर, 5 किलो गौमूत्र, 1-2 किलो गुड़, 100-200 मिली सरसों, मूंगफली आदि कोई भी खाने का तेल, 1-2 किलो कोई भी सस्ती दाल चना-मटर आदि का आटा तथा एक मुट्ठी भर पेड़ के नीचे की मिट्टी-ये मिला कर रख दें। 7-8 दिन में सड़कर क्रिया पूरी हो जायेगी और 1 एकड़ जमीन के लिए खाद तैयार हो जायेगा। इस खाद को ड्रम में टूंटी लगाकर धोरे (नाली) के माध्यम से फसल में दे सकते हैं तथा मिट्टी मिलाकर हाथ से भी छिड़क सकते हैं।
18. 5 किलो गौमूत्र, 3 किलो ज्यादा बीज वाली तीखी हरी मिर्च, आधा किलो लहसुन, नीम, भांग, धतूरा, आक, तम्बाकू, एरण्ड या अनार में से जिसका भी पत्ता उपलब्ध हो जाये, उस पेड़ या पौधे का पांच किलो पत्ता-ये सब लेकर पानी में उबाल लो। करीब एक घण्टा मध्यम आंच पर उबालने के बाद छानकर-निचोड़कर रख लो। मिर्च, लहसुन व पत्तियों को अच्छी तरह से कूटकर गौमूत्र में डालकर उबालना है। ये 1 एकड़ जमीन के प्राकृतिक कीटनाशक तैयार हो जाता है। इसे फसल के अनुसार 100-125 लिटर पानी में मिलाकर फसल में छिड़क सकते हैं। वैसे कुदरती खेती पर 99% ये प्राकृतिक कीटनाशक भी डालने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी फिर भी यदि बहुत जरूरी हो तो ये डाल सकते हैं।
19. जीरा व धनिया आदि कोमल व नाजुक संवेदनशील फसलों पर तो केवल गौमूत्र छिड़कने से ही कीट मर जाते हैं।

20. फसलों पर जो तैला आ जाता है, उसके लिए दूध में थोड़ा गुड़ मिलाकर या ऊपर बताया गया कीटनाशक छिड़क देते हैं तो वो तुरन्त मर जाता है। एक एकड़ के लिए 3-4 लीटर दूध व 1 किलो गुड़ पर्याप्त होता है।
21. फंगस के लिए 15-20 दिन पुरानी 4-5 लीटर छाछ 1 एकड़ के लिए पर्याप्त होती है।
22. फसलों में विशेष रूप से सब्जियों की चमक व ऊपज बढ़ाने के लिए विदेशी कम्पनियाँ 30 से 40 रुपये लीटर का जिबरेला एसिड बेचती हैं। इसके लिए 1 एकड़ जमीन हेतु 1 साल पुराने गाय के कण्डे या उपले लेकर 10-15 किलो पानी में डालकर एक ड्रम में किसी भी पेड़ के नीचे या कहीं भी छाया में रख दें और सुबह-शाम किसी भी लकड़ी के डण्डे से हिला दें। 10-15 दिन में यह 1 एकड़ के लिए जीवामृत तैयार हो जाता है। अब इसे फसलों पर छिड़क देते हैं यह जिबरेला एसिड से अधिक लाभकारी है।
23. नील गाय, जंगली सुअर, हाथी एवं गीदड़ आदि जंगल के जानवरों से फसलों की सुरक्षा हेतु एक बहुत ही कारगर उपाय है, जिसे हम भी अपने संस्थान में अपना रहे हैं। अपने खेत के चारों तरफ एक साधारण सी रस्सी बांधकर उसमें लगभग 20-20 फिट की दूरी पर 2-2 फिट की लकड़ी की पतली डण्डियों पर दोनों सिरों के ऊपर 2-2 इंच की रूई या पुराने कपड़े को लगाकर उस पर शाम को डॉक्टर ब्राण्ड का काला फिनाइल लगा देते हैं। पहले 3-4 दिनों तक रोज ये काला फिनाइल लगाते हैं, फिर बाद में 3-4 दिनों में एक बार फिनाइल लगाते हैं और उसकी गंध से जंगली पशु खेत में नहीं आते। क्योंकि उनको लगता है कि ये गन्ध उनके जीवन के लिए खतरा बन सकती है। अत: वे खेत में प्रवेश ही नहीं करते। ये हमारा भी तथा भाई शूरवीर सिंह जी का कई वर्षों का आजमाया हुआ 100% सफल प्रयोग है।

    उपरोक्त विधि से खेती करने वाले किसान की खेती में लागत कम होती तो स्वाभाविक रूप से उसकी आमदनी बढ़ेगी। आजकल रासायनिक खेती में उल्टा खतरनाक षड्यन्त्रकारी कुचक्र चल रहा है, लागत बहुत ज्यादा, फसल थोड़ी-सी ज्यादा और अन्त में किसान को घाटा, जबकि कुदरती खेती में लागत ना के बराबर, ऊपज पूरी व लाभ पूरा होता है। इस प्रक्रिया से खेती करने पर किसान व खेत में काम करने वाले मजदूर बीमार भी नहीं होते जबकि खाद व कीटनाशक खेतों में डालने से वे हवा व पानी में मिलकर पहले तो सीधे हमारे शरीर में जाते हैं तथा फसल व आहार के रूप में भी ये खाद-कीटनाशकों का विष हमारे शरीर में आता है। इससे कैंसर टी.बी. व संतान न होना पशुओं का नये दूध ना होना, चर्म रोग, पेट, हृदय के रोग, शुगर, बी. पी. आदि बीमारियों के साथ-साथ विकलांग संतान पैदा होने का खतरा होता है। अत: कुदरती खेती करके ही हम अपनी व अपने देश की रक्षा कर सकते हैं।

    कुदरती व विषमुक्त खेती का यह विषय गांव की सभा में स्वदेशी प्रचारक को याद न भी हो तो बिन्दुवार उनको पढ़कर अवश्य सुनायें। इससे गांव में एक बहुत बड़ी क्रान्ति होगी।

विषमुक्त जैविक व प्राकृतिक कृषि के लाभ :

1. उत्पन्न खाद्यान मे विटामिन, खनिज, व पोषक तत्व उच्च मात्रा मे होते है।
2. ये खाद्यान उच्च गुणवत्ता युक्त व स्वास्थप्रद होते हैं।
3. व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है तथा रोगो से मुक्त रहता है।
4. ये खाद्यान्न खाने मे स्वादिष्ट लगते हैं।
5. इस खाद्यान्न को हम लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं।
6. जैविक कृषि मे लागत मूल्य कम आता है।
7. उत्पन्न खाद्यान्न ऊँचे दामो मे बाजार मे बिकता है, जिससे किसानो को लाभ होता है।
8. रासायनिक खाद व कीटनाशको पर होने वाला किसान का खर्च बच जाता है।
9. विषमुक्त भोजन से होने वाले भयंकर रोगो की असहनीय पीड़ा व इलाज पर होने वाले खर्च की बचत होती है।
10. हमारी जमीन बंजर होने से बचती है।
11. हम धरती को माँ कहते हैं इसलिए विषमुक्त/जैविक/प्राकृतिक खेती करके हम अपनी धरती माँ की धमनियों में जहर नही डालते हैं।
12. हमारी प्राचीन कृषि संस्कृति की रक्षा होगी, क्योंकि भारत मे कृषि एक सांस्कृतिक पक्ष है।
13. हमारे पशुधन का संवर्धन होता है।